

प्राप्त किया गया हो, जैसे- अनुभव सिद्ध-प्रयोग, अनुभव सिद्ध-औषधि।

अनुभव-सुख पुं. (तत्.) 1. स्वयं के अनुभव से प्राप्त सुख, अनुभवजन्य सुख 2. आत्मानुभूति जन्य आनंद।

अनुभवहीन वि. (तत्.) [अनुभव-हीन] जिसने अनुभव प्राप्त न किया हो, जिसे किसी प्रकार का अनुभव ही न हुआ हो विलो. अनुभवी।

अनुभवाश्रित वि. (तत्.) [अनुभव+आश्रित] 1. जो किसी प्रकार के किए गए अनुभव पर आश्रित हो, अनुभव सापेक्ष 2. पा.दर्श. वह तथ्यात्मक बोध या ज्ञान जो व्यक्ति के आंतरिक अनुभव से ही संबद्ध हो, बाहर से न हो जैसे- अनुभवाश्रित सत्य।

अनुभविता वि. (तत्.) अनुभव करने वाला जैसे- साध्य का अनुभविता साधक।

अनुभवी वि. (तत्.) अनुभवप्राप्त, जानकार, जिसे अनुभव प्राप्त है, तजुर्बेकार।

अनुभाग पुं. (तत्.) किसी कार्यालय या विभाग के अंतर्गत कोई छोटा विभाग, उपविभाग।
section

अनुभाव पुं. (तत्.) 1. प्रताप, प्रभाव 2. महिमा, बड़ाई 3. स्थायी मनोभाव को व्यंजित करने वाली भावभंगिमा, जैसे- रोमांच, भ्रमंग, आदि चेष्टाएं काव्य में रस निष्पत्ति के चार तत्वों में से एक।

अनुभावक वि. (तत्.) प्रतीति या अनुभव कराने वाला।

अनुभावन पुं. (तत्.) अपने मन के भावों को आंगिक चेष्टाओं या किसी प्रकार के संकेतों से व्यक्त करना।

अनुभावित वि. (तत्.) 1. अत्यधिक शक्तिसंपन्न, प्रतापी 2. अनुभवी, अनुभवसंपन्न।

अनुभावी वि. (तत्.) 1. जिसे अनुभव या संवेदना हो, 2. बाद में आनेवाला, बाद में होनेवाला।

अनुभाव्य वि. (तत्.) जिसका अनुभव किया जा सकता हो, अनुभव के योग्य।

अनुभाषक पुं. (तत्.) कंप्यू. वह विशेष क्रमादेश, जो उच्चस्तरीय स्रोत भाषा में लिखे क्रमादेशों को लक्ष्यभाषा में रूपांतरित कर देता है compiler

अनुभाषण पुं. (तत्.) 1. किसी स्थापना का खंडन करने के लिए पुनःकथन, पुनराख्यान 2. कथोपकथन।

अनुभूत वि. (तत्.) जिसका अनुभव हुआ हो, जिसका व्यावहारिक ज्ञान हुआ हो।

अनुभूति स्त्री. (तत्.) संवेदनायुक्त प्रत्यक्षण, भावना, संवेगात्मक या भावात्मक अनुभव, प्रत्यक्ष ज्ञान।

अनुभूति-दशा स्त्री. (तत्.) 1. किसी तथ्य या ज्ञान के अनुभूति की अवस्था 2. साहि. कवि द्वारा किसी भाव के मार्मिक रूपों व उसके वर्णनात्मक रूपों को अनुभूति का विषय बनाए जाने की अवस्था, स्थिति, जैसे- काव्य रस की अनुभूति दशा में स्थित कवि।

अनुभूति-योग पुं. (तत्.) 1. अनुभूति से संबंधित योग 2. काव्य. किसी कवि/रचनाकार की वह अनुभूति जो सबकी अनुभूति बन जाती है।

अनुभूति योगी पुं. (तत्.) साहि. अनुभूति योग का साधक वह कवि या रचनाकार जिसकी अनुभूति या अनुभूति जन्य रचनाएँ सब को तदनुरूप ही अनुभूति कराने वाली होती हैं।

अनुभूत्याभास पुं. (तत्.) [अनुभूति+आभास] काव्य. जिस काव्य या कविता से जीवन की वास्तविक अनुभूति न होकर केवल उसका आभास मात्र होता है अथवा सहृदय के मन-मस्तिष्क में सामान्य संवेदना जन्य अनुभूति होती है।

अनुभेद पुं. (तत्.) [अनु-भेद] किसी वस्तु, व्यक्ति आदि का छोटा भेद, उपभेद, किसी भेद का भी उपभेद जैसे- संज्ञा के भेद और अनुभेद 2. मीरा कृष्णभक्ति में रसमग्न होकर भेद-अनुभेद से परे थी।

अनुमंता वि. (तत्.) अनुमति देनेवाला, स्वीकृति देनेवाला।